भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि एवं किसान कल्याण विभाग
राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 2442
13 मार्च 2026 को उत्तरार्थ

विषय: नैनो उर्वरकों का उपयोग
2442. श्रीमती सुमित्रा बाल्मीकः
क्या **कृषि और किसान कल्याण** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः
(क) देश में नैनो उर्वरकों के उपयोग की सीमा क्या है;
(ख) उन्नत उर्वरकों के लाभ और उनकी उपलब्धता क्या है; और
(ग) फसल उत्पादकता में सुधार के लिए मंत्रालय द्वारा क्या कदम उठाए जा रहे हैं?

उत्तर
कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री (श्री भागीरथ चौधरी)

(क) और (ख) उर्वरक विभाग से प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार, फरवरी 2021 से अब तक (फरवरी 2026 तक), देश भर में नैनो यूरिया की 12.19 करोड़ बोतलें (500 मिलीलीटर के बराबर) बेची जा चुकी हैं । मार्च 2023 में नैनो डाई-अमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) की शुरुआत किए जाने के बाद से अब तक (फरवरी 2026 तक), 3.74 करोड़ बोतलें (500 मिलीलीटर के बराबर) बेची जा चुकी हैं।

उन्नत उर्वरक वैसे उर्वरक हैं जिन्हें उन्नत तकनीकों जैसे धीमी गति से निकलने वाले (स्लो-रिलीज) उर्वरक, नियंत्रित गति से निकलने वाले (कंट्रोल्ड रिलीज) उर्वरक, लेपित उर्वरक और नैनो उर्वरकों से विकसित किया गया है, जो फसलों के लिए पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ाते हैं और पोषक तत्वों के उपयोग संबंधी दक्षता में सुधार करते हैं।

मृदा के स्वास्थ्य को बनाए रखने और फसल उत्पादकता में सुधार के लिए संतुलित उर्वरक का प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के दीर्घकालिक उर्वरक प्रयोगों (एलटीएफई) के परिणामों से पता चला है कि उर्वरकों के विवेकपूर्ण और संतुलित उपयोग से फसल उत्पादकता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। आईसीएआर ने उर्वरकों, जैविक खादों और जैव-उर्वरकों के उपयोग पर कई फसल-विशिष्ट उर्वरक अनुशंसाओं और प्रौद्योगिकियों को विकसित और प्रसारित किया है, और साथ ही यह किसानों और हितधारकों के लिए इन पहलुओं पर प्रशिक्षण और क्षमता-निर्माण कार्यक्रम भी आयोजित करता है।

(ग) सरकार मृदा स्वास्थ्य एवं उर्वरता स्कीम के माध्यम से उर्वरकों के विवेकपूर्ण उपयोग को प्रोत्साहित करती है। यह स्कीम सभी कृषि जोतों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड (एसएचसी) उपलब्ध कराने के लिए वर्ष 2014-15 से कार्यान्वित है ताकि उत्पादकता और मृदा उर्वरता में सुधार के लिए संतुलित एवं एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन को बढ़ावा दिया जा सके। मृदा के नमूनों को मानक प्रक्रियाओं के अनुसार प्रोसेस किया जाता है और पीएच, विद्युत चालकता, ओर्गेनिक कार्बन, उपलब्ध नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटेशियम, सल्फर और सूक्ष्म पोषक तत्वों (जिंक, कॉपर, आयरन, मैंगनीज और बोरॉन) जैसे मापदंडों के लिए उनका विश्लेषण किया जाता है। किसानों के खेतों के मृदा स्वास्थ्य मूल्यांकन के आधार पर उन्हें पोषक तत्वों के संतुलित उपयोग पर सलाह दी जाती है। वर्ष 2014-15 से अब तक देश भर में 25.89 करोड़ एसएचसी कार्ड जारी/वितरित किए जा चुके हैं। सरकार द्वारा राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन - तिलहन (एनएमईओ-ओएस), दलहन आत्मनिर्भरता मिशन, राष्ट्रीय ऑयल पाम मिशन, प्रति बूंद अधिक फसल, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन, कृषि मशीनीकरण उप-मिशन आदि जैसे विभिन्न कार्यक्रम का कार्यान्वयन किया जा रहा है, जो कृषि उत्पादकता की वृद्धि करने में योगदान दे रहा है।

******